

Inhalt

| | |
|--|-----|
| Einleitung | 10 |
| | |
| Voraussetzungen | |
| Vorgeschichte | 12 |
| Prägungen | 19 |
| Abwege | 23 |
| Leitbilder | 28 |
| Eine Stilwende: Herman Roth, Hugo Distler, Ernst Pepping | 36 |
| Stuttgart 1937: Bornefeld trifft Distler | 52 |
| | |
| Die frühen Jahre | |
| Heidenheim, Juli 1946: Der Aufruf | 61 |
| Bad Boll, August 1946: Bornefeld trifft Reda | 68 |
| Heidenheim, August 1948: die ersten gemeinsamen Arbeitstage | 75 |
| Siegfried Reda: Schule des Orgelspiels | 83 |
| 1949 – 1951: Entfaltung | 90 |
| Pläne | 97 |
| 1952: Aufschwung | 101 |
| Zur Rezeption der Orgelmusik | 105 |
| | |
| Die mittleren Jahre | |
| 1953/54: Am Zenit | 121 |
| Ein Wochenplan | 133 |
| Die erneuerte Orgel der Pauluskirche | 134 |
| 1955: Zweifel und Hoffnung | 139 |
| 1956/57: Konfrontationen und ein neuer Höhepunkt | 146 |
| | |
| Die späten Jahre | |
| Loccum 1957: Das Ende der Singbewegung | 160 |
| Bornefeld korrespondiert mit Adorno | 169 |
| Die Genese der Reda-Schuke-Orgel in der Petrikirche zu Mülheim/Ruhr | 176 |
| 1959/60: Niedergang | 190 |
| Das Ende | 195 |
| | |
| Wie es weiterging | 199 |
| Abkürzungen | 218 |
| Der Autor | 220 |
| Anhang | 221 |
| Register | 239 |